

डॉ. एंथनी जे. टोमासिनो, दस आज़ाएँ

सत्र 5, आज़ा 4: सब्बाथ

यह डॉ. एंथनी जे. टोमासिनो और दस आज़ाओं पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 5 है, आज़ा 4: सब्बाथ।

तो अब चौथी आज़ा की ओर बढ़ते हुए, सब्बाथ के दिन को पवित्र रखने के लिए याद रखें।

लेकिन आप में से कुछ लोग एरिक लिडेल और फिल्म, द चैरियट्स ऑफ फायर के नाम से परिचित होंगे। याद है? यह उन कुछ फिल्मों में से एक है जिसका विषय स्पष्ट रूप से धार्मिक है और जिसने कभी बड़ी प्रशंसा हासिल की, लेकिन शायद संगीत के लिए किसी और चीज से ज़्यादा। लेकिन एरिक लिडेल एक स्कॉटिश धावक थे जिन्हें 1924 के ओलंपिक खेलों में भाग लेने के लिए चुना गया था।

और समस्या यह थी कि लिडेल एक बहुत ही धार्मिक ईसाई थे और उन्होंने रविवार को दौड़ लगाने से इनकार कर दिया। इसलिए, जब उन्हें पता चला कि सौ मीटर की दौड़ का फाइनल रविवार को होगा, तो उन्होंने उस इवेंट से बाहर होने का फैसला किया, जो उनका सबसे अच्छा इवेंट था। और उन्होंने इसके बजाय 200 और 400 मीटर की दौड़ में भाग लेने का फैसला किया।

400 मीटर की दौड़ से पहले, हमें बताया गया कि उसे एक महिला ने एक नोट दिया था और उसने उसे खोला और पाया कि उस नोट पर एक शास्त्र लिखा हुआ था। इसमें लिखा था, जो मेरा सम्मान करता है, मैं उसका सम्मान करूंगा। और लिडेल ने 400 मीटर की दौड़ में स्वर्ण पदक जीता, भले ही यह उसका सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रम नहीं था।

अब, हॉलीवुड की बदौलत, लिडेल शायद हाल के इतिहास में सबसे प्रसिद्ध सब्बाथ कीर्पस में से एक बन गए हैं, लेकिन यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि वह वास्तव में अकेले नहीं हैं। वास्तव में कई अन्य लोग हैं, विशेष रूप से पेशेवर एथलीट जो काफी प्रसिद्ध थे। एली हेरिंग, 1995 ने एनएफएल ड्राफ्ट में प्रवेश करने से इनकार कर दिया क्योंकि खेल रविवार को खेले जाते हैं और उन्हें लगा कि उन्हें रविवार के सब्बाथ दिवस का सम्मान करना चाहिए।

वह छह अंकों के अनुबंध के लिए चुने गए थे, और फिर भी उन्होंने अपने सिद्धांतों से समझौता करने से इनकार कर दिया। उनका कथन था, रविवार चर्च का दिन है, पैसे कमाने का नहीं। माइकल जोन्स एक फुटबॉल खिलाड़ी थे, बल्कि रग्बी खिलाड़ी थे, 1991 के न्यूजीलैंड विश्व कप मैच में स्टार रग्बी खिलाड़ी थे, जो रविवार को निर्धारित था।

और जोन्स ने खेलने से मना कर दिया क्योंकि यह रविवार को था। और परिणामस्वरूप, उनकी टीम तीसरे स्थान पर आई और जोन्स राष्ट्रीय नायक से न्यूजीलैंड में एक तरह से बहिष्कृत व्यक्ति बन गए। इसलिए, आज भी, सब्बाथ को बनाए रखने की कोशिश करने से लोगों पर कुछ हानिकारक प्रभाव पड़ सकते हैं।

तो चौथी आज्ञा, सब्त के दिन को याद रखो, उसे पवित्र बनाओ, छः दिन तुम काम करो, तुम अपना सारा काम कर सकते हो, लेकिन सातवाँ दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिए सब्त है। तुम या तुम्हारा बेटा या तुम्हारी बेटी, तुम्हारा दास, तुम्हारी दासी, तुम्हारे मवेशी या तुम्हारे फाटकों के भीतर कोई भी परदेशी कोई काम नहीं करेगा। क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और उनमें जो कुछ है, सब बनाया और सातवें दिन विश्राम किया।

इसलिए, यहोवा ने सातवें दिन को आशीर्वाद दिया और उसे पवित्र बनाया। इसलिए सब्त का दिन, सब्त के दिन को याद रखें। सब्त का क्या मतलब है? अब, यह उन शब्दों में से एक है जिसकी व्युत्पत्ति के बारे में विद्वानों ने बहुत सोचा है, यह काफी सरल लगता है, और फिर भी, निश्चित रूप से, यह कभी भी उतना सरल नहीं होता जितना लगता है।

जाहिर है, यह शब्द हिब्रू क्रिया शब्द से आया है, जिसका अर्थ है रुकना। और सब्बाथ एक ऐसा शब्द हो सकता है जिसका अर्थ रुकना या रुक जाना हो। समस्याओं में से एक यह है कि इस मामले में संज्ञा रूप बहुत अधिक समझ में नहीं आता है, लेकिन यह तार्किक रूप से समझ में आता है, क्योंकि आप श्रम करना बंद कर रहे हैं, और इसलिए आप इसे समाप्ति दिवस, या समाप्ति दिवस, या जो भी कहते हैं।

यहाँ दोहरा महत्व है। स्पष्ट रूप से, यह सप्ताह के अंत को संदर्भित करता है, इसलिए सप्ताह समाप्त हो गया है, लेकिन यह काम से विरत रहने को भी संदर्भित करता है। सब्बाथ के कानूनी निहितार्थ, किसी के लिए काम से विरत रहने का क्या मतलब है, यह वास्तव में पुराने नियम में अच्छी तरह से परिभाषित नहीं किया गया था।

यह तब तक नहीं था जब तक फरीसी नहीं आए, जिन्होंने तय किया कि वे इस पर सभी तरह के नियम थोपने जा रहे हैं ताकि यह स्पष्ट हो जाए कि सब्त का पालन करने का क्या मतलब है, कम से कम उनके दृष्टिकोण से, तब यह बहुत अधिक स्पष्ट हो गया, और हम कह सकते हैं कि बोझिल किस्म का मुद्दा बन गया। ठीक है, तो सब्त को हम तकनीकी रूप से अजीब कहते हैं। यह विचार कि आप एक दिन लेते हैं, और इसे आराम के दिन के रूप में अलग रखते हैं, काम से परहेज करने का दिन, पूजा का दिन, एक ऐसा दिन जब आप पैसा नहीं कमाते, यह हमारी अमेरिकी भावना के विपरीत लगता है, आप कह सकते हैं, क्योंकि एक सच्चा अमेरिकी 24-7 काम करता है, और यही सद्गुण है।

कभी भी विश्राम न करना पुण्य है, और इसलिए सब्बाथ का विचार हमारे लिए अजीब और विदेशी है। यह कहाँ से आता है? क्या प्राचीन दुनिया में बहुत से लोग सब्बाथ का पालन करते थे, और इस्राएली उनमें से एक थे? खैर, ऐसा नहीं लगता है। अब, यह दिलचस्प है, आप जानते हैं, मैं वास्तव में कई प्रोफेसरों को जानता हूँ जो इस बात से अवगत नहीं थे कि खतना वास्तव में प्राचीन निकट पूर्वी दुनिया में बहुत व्यापक था, कि इस्राएल के आसपास के कई लोग विभिन्न तरीकों से खतना करते थे।

मिस्र के लोग खतना को एक संस्कार के रूप में मानते थे जब लड़का लगभग 13 वर्ष का हो जाता था, जो मुझे लगता है कि एक तरह से क्रूर है, लेकिन आप जानते हैं, सूअर के मांस पर प्रतिबंध

एक और चीज है जो प्राचीन दुनिया में वास्तव में काफी आम थी। इज़राइल के आस-पास कई अन्य लोग भी थे जो सूअर का मांस नहीं खाते थे, सिर्फ़ यहूदियों के अलावा, लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं है कि इज़राइल के किसी भी पड़ोसी ने हर सातवें दिन को आराम के दिन के रूप में मनाया हो। कुछ सबूत हैं कि मिस्रियों ने 10वें दिन को अलग रखा होगा, लेकिन बहुत कुछ स्पष्ट नहीं है, खैर, सबूत विरोधाभासी हैं, और इसलिए यह वास्तव में निश्चित नहीं है कि उन्होंने इसे किस तरह का महत्व दिया।

स्पष्ट रूप से, इस्राएल के लिए, सब्त का दिन एक पहचान चिह्न था। यह सिनाई की वाचा का एक संकेत था, ठीक वैसे ही जैसे खतना अब्राहम की वाचा का संकेत था। और इसलिए, उन्होंने इसे कुछ ऐसा माना जो उन्हें अद्वितीय बनाता था और उन्हें अन्य लोगों से अलग करता था, और ऐसा हुआ भी।

यह इतना सरल है। उन्हें यह धारणा क्यों मिली? यह कहाँ से आई? खैर, 1900 के दशक की शुरुआत में, मेनहोल्ड नाम के एक जर्मन विद्वान को बेबीलोनियन शब्द, शेपुतु मिला, जिसे सेबुतु के रूप में भी व्याख्या किया गया है, क्योंकि बेबीलोनियन में रूपिम या ध्वनि का उच्चारण किसी भी तरह से किया जा सकता है। पुराने सिद्धांत ने सोचा कि सेबुतु, जो जाहिर तौर पर बेबीलोन में हर महीने होने वाला एक त्यौहार था, शायद सब्बाथ के इज़राइली विचार का मूल था।

कुछ संभावित सबूत हैं, और लंबे समय तक, यह सिद्धांत किसी तरह से पक्ष से बाहर हो गया था, और फिर भी अब यह फिर से वापस आ रहा है। और इसलिए, बस बहुत संक्षेप में, कुछ चीजें जो इस विचार का समर्थन करती प्रतीत होती हैं, वे अक्सर पुराने नियम में होती हैं, जब सब्त का उल्लेख किया जाता है, तो इसका उल्लेख नए चंद्रमा के संबंध में किया जाता है। इसलिए, राजाओं की पुस्तक में, हम कुछ अंशों को देखेंगे जो नए चंद्रमा या सब्त के बारे में बात करेंगे।

भविष्यवक्ताओं की किताबों में, कभी-कभी यह उल्लेख किया जाता है, मुझे आपके नए चाँद के त्यौहार और आपके सब्बाथ से नफरत है। और इसलिए, नए चाँद और सब्बाथ को अक्सर एक साथ जोड़ दिया जाता है। और इसलिए, इस पुराने सिद्धांत ने अनुमान लगाया कि सब्बाथ पूर्णिमा को संदर्भित कर सकता है, और यह किसी तरह बेबीलोन के विचार से निकला था कि आपके पास यह मासिक त्यौहार था।

और इसलिए, सब्बाथ मूल रूप से एक मासिक त्यौहार था जिसे नए चाँद के दिन मनाया जाता था। दूसरी ओर, बाइबल में कुछ बहुत ही प्राचीन ग्रंथों में बताया गया है कि हर सातवें दिन आपको आराम करना चाहिए, और अपने जानवरों को आराम देना चाहिए, और भूमि को आराम देना चाहिए, आदि, आदि। लेकिन उनमें से कुछ अंश, वास्तव में, कुछ अंश जिन्हें विद्वान बहुत पहले मानते हैं, सब्बाथ शब्द का उपयोग नहीं करते हैं।

तो, सिद्धांत यह है कि अंततः सब्बाथ, जो एक पूर्णिमा का त्यौहार था, एक साथ आया और विश्राम के सातवें दिन के साथ विलीन हो गया और सब्बाथ दिवस बन गया। बहुत अटकलें हैं, इसके पीछे बहुत सारे सबूत नहीं हैं। चतुराईपूर्ण, लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि हम वास्तव में कह सकते हैं कि यह विश्वसनीय है।

अगर वह स्रोत नहीं है, तो हमारे पास अभी भी कुछ मुद्दे बचे हुए हैं, क्योंकि यह थोड़ा विरोधाभासी है। कम से कम कहें तो कुछ सबूत धुंधले हैं। इसलिए, बाइबिल के रिकॉर्ड से पता चलता है कि दस आज्ञाएँ दिए जाने से पहले भी इज़राइल में सब्त मनाया जाता था, जो दिलचस्प है।

यहाँ, जो अंश हमारे लिए सबसे ज़्यादा दिलचस्प है, वह निर्गमन अध्याय 16 से आता है, और यह मन्ना दिए जाने की कहानी है। तो, आपको याद होगा कि कहानी इस तरह से है कि लोग भगवान से रोए, शिकायत कर रहे थे क्योंकि उनके पास रोटी नहीं थी, इसलिए भगवान ने मन्ना भेजा। हर सुबह वे बाहर जाकर मन्ना इकट्ठा करते थे, लेकिन उन्हें बताया गया था कि उन्हें सब्त के दिन मन्ना इकट्ठा नहीं करना है, और यह वास्तव में बाइबल में सब्त के दिन का सबसे पहला संदर्भ है, निर्गमन 16।

उसने उनसे कहा, "यह वही है जो प्रभु ने आज्ञा दी है। कल सब्त का विश्राम दिन है, प्रभु के लिए पवित्र सब्त, इसलिए जो पकाना है उसे पकाओ, जो उबालना है उसे उबालो, जो कुछ बचा है उसे बचाकर सुबह तक रखो। यह निर्गमन अध्याय 20 से पहले की बात है, सिनाई में कानून दिए जाने से पहले की।

तो, इसका मतलब यह है कि सातवें दिन को सिनाई में कानून दिए जाने से पहले ही सब्त के विश्राम के रूप में अलग रखा गया था। इसका महत्व, कहना थोड़ा मुश्किल है। उन्होंने इसे सुबह तक बचाकर रखा, और मूसा ने आज्ञा दी, कि अगर उसमें बदबू न आए या कीड़े न लगें, तो उसे आज ही खा लो, मूसा ने कहा, क्योंकि आज प्रभु के लिए सब्त है।

आज आपको ज़मीन में कुछ भी नहीं मिलेगा, जिसका मतलब यह हो सकता है कि सब्त के दिन परमेश्वर खुद आराम करता है। छह दिन तक आपको इसे इकट्ठा करना है, लेकिन सब्त के सातवें दिन, कुछ भी नहीं होगा। तो, यह बाइबल में सब्त का पहला उल्लेख है, और जैसा कि मैं फिर से कहता हूँ, यह सिनाई में कानून दिए जाने से पहले होता है।

क्या यह अजीब लगता है? ठीक है, थोड़ा सा, लेकिन आपको याद रखना चाहिए कि इस्राएलियों का मानना था कि उन्हें सिनाई में आदेश दिए जाने से पहले आपको हत्या नहीं करनी चाहिए। इसलिए, यह मानना कि उन्हें औपचारिक आदेश मिलने से पहले ही सब्त का पालन करना था, सिनाई वाचा में आदेश ने इसे औपचारिक रूप दिया, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि सब्त के नियम दिए जाने से पहले सब्त का पालन करने की कोई संभावना नहीं थी। निर्गमन 20 के अनुसार, सब्त की नींव सृष्टि में है, और निर्गमन 31 17 भी इस पुष्टि को दोहराता है।

हम सब्त का दिन क्यों मनाते हैं? हम सब्त का दिन इसलिए मनाते हैं क्योंकि परमेश्वर ने खुद इस सिद्धांत की स्थापना की थी। परमेश्वर ने छह दिन काम किया। सातवें दिन परमेश्वर ने अपने काम से विश्राम किया।

इसलिए, आप लोग छह दिन काम कर सकते हैं, लेकिन सातवें दिन आपको आराम करना चाहिए। व्यवस्थाविवरण 5 में सृष्टि का उल्लेख नहीं है। हमें यह शायद कुछ व्याख्यानों से याद है।

बल्कि, यह सब के लिए एक और तर्क देता है। याद रखें, आप मिस्र की भूमि में एक गुलाम थे। यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें वहाँ से शक्तिशाली हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के साथ बाहर लाया।

इसलिए, तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें सब के दिन को मनाने की आज्ञा दी है। तो, यह एक अलग तरह का तर्क है, जो परमेश्वर और इस्राएल के बीच वाचा के रिश्ते पर आधारित है, जो बहुत महत्वपूर्ण था, व्यवस्थाविवरण के पूरे संदेश के लिए बहुत केंद्रीय था। और इसलिए, व्यवस्थाविवरण के संदर्भ में, वह तर्क समझ में आता है।

अन्यथा, आप जानते हैं, आप व्यवस्थाविवरण में दस आज्ञाओं की पुनरावृत्ति को पढ़ते हैं, और सब कुछ लगभग वैसा ही है जैसा कि निर्गमन की पुस्तक में है। इसलिए, मुझे नहीं लगता कि हमें इन्हें विरोधाभासी के रूप में देखना चाहिए। बल्कि, मुझे लगता है कि हमें इन्हें पूरक के रूप में देखना चाहिए।

मुझे लगता है कि इस्राएलियों के दिमाग में शुरू में यह तर्क था कि सातवें दिन का चक्र ईश्वर द्वारा सृष्टि के समय स्थापित किया गया था, और इस तथ्य का मामला कि इस्राएली खुद गुलाम थे, वे जानते थे कि काम करना और बिना आराम के काम करना और चलाना क्या होता है। उन्हें दयालु लोगों की ज़रूरत थी, क्योंकि जब प्रभु ने उन्हें मिस्र से बाहर निकाला था, तब उन्होंने उनके प्रति अपनी करुणा दिखाई थी। संख्या और लेवितस अक्सर सब के बारे में चर्चा करते हैं, लेकिन वे कभी भी यह तर्क नहीं देते हैं कि सब के पालन क्यों किया जाना चाहिए।

तो, हम कह सकते हैं कि हम एक धार्मिक पहेली में फंस गए हैं। क्या भगवान को आराम करने की ज़रूरत है? अगर आप उत्पत्ति की कहानी को बहुत शाब्दिक रूप से लें, तो आप जानते हैं, भगवान सातवें दिन अपने काम से विरत हो जाते हैं, और फिर सातवें दिन को आशीर्वाद देते हैं, और सातवाँ दिन वह दिन बन जाता है जिस दिन उनके लोगों को भी भगवान के उदाहरण का अनुसरण करते हुए आराम करना चाहिए। हम इसे बहुत शाब्दिक रूप से ले सकते हैं, लेकिन अगर हम ऐसा करते हैं, तो हम चर्च और यहूदी धर्म में एक लंबी परंपरा के खिलाफ जा रहे होंगे, जो इसे शाब्दिक रूप से नहीं बल्कि अधिक आलंकारिक रूप से लेते हैं।

यहूदी और ईसाई दोनों ही इस धारणा से नाराज़ थे कि भगवान को आराम करने की ज़रूरत होगी। और इसलिए, इसे शाब्दिक रूप से व्याख्या करने के बजाय, उन्होंने तर्क दिया, दोनों परंपराओं ने माना कि कहानी हमारे लिए एक सबक थी, इसलिए नहीं कि भगवान को आराम की ज़रूरत थी, बल्कि इसलिए कि हमें आराम की ज़रूरत है। और इसलिए, आराम का दिन क्यों होगा, इसका सिद्धांत सृष्टि के समय ही स्थापित किया गया था, एक जीवन लय स्थापित करने के तरीके के रूप में जो वास्तव में ब्रह्मांड के लिए आधारभूत है।

सब्बाथ सिर्फ यहूदियों का नियम नहीं है। यह सिर्फ इस्राएलियों का नियम नहीं है। सब्बाथ सूअर का मांस न खाने के नियम जैसा नहीं है।

यह आपके कपड़ों में दो अलग-अलग तरह की सामग्री न रखने के बारे में नियमों की तरह नहीं है। बल्कि, सब्बाथ उन सिद्धांतों में से किसी से भी पहले स्थापित किया गया है और एक तरह से,

पूरी प्रकृति पर बाध्यकारी है, न कि केवल यहूदी लोगों पर। बेशक, दस आज्ञाओं का हिस्सा होने के नाते, यह भगवान और उनके लोगों के बीच के रिश्ते का एक खास हिस्सा बन जाता है, जैसा कि वे कहते हैं, एक पहचान चिह्न।

और फिर भी, तर्क उस संदर्भ से आगे बढ़कर इसे ईश्वर के समस्त सृष्टि के साथ संबंध के एक बड़े संदर्भ में रखता है। अब, पुराने नियम में, सैद्धांतिक रूप से, सब्त के दिन को तोड़ने की सज़ा बहुत, बहुत कठोर थी। संख्या 15, जब इस्राएल के लोग जंगल में थे, तो उन्होंने एक आदमी को सब्त के दिन लकड़ियाँ इकट्ठी करते हुए पाया।

और जो लोग उसे लकड़ियाँ बटोरते हुए पाए, वे उसे मूसा और हारून और सारी मण्डली के पास ले आए। उन्होंने उसे हिरासत में ले लिया क्योंकि यह स्पष्ट नहीं किया गया था कि उसके साथ क्या किया जाना चाहिए। और यहोवा ने मूसा से कहा, उस आदमी को मौत की सज़ा दी जानी चाहिए।

सारी मण्डली उसे छावनी के बाहर पत्थरों से मार डालेगी। और सारी मण्डली उसे छावनी के बाहर ले गई और पत्थरों से मार डाला, जैसा कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। यहाँ विचार यह है कि उसके कार्य से समुदाय खतरे में पड़ गया था।

और इसलिए, समुदाय उसकी सज़ा की ज़िम्मेदारी लेगा। मुझे लगता है कि हमारे लिए इतनी बड़ी सज़ा को समझना मुश्किल है, जो हमें इतनी छोटी लगती है। लेकिन जब आप इसके बारे में सोचते हैं, और एक व्यक्ति द्वारा सब्बाथ के दिन को नज़रअंदाज़ करने के संभावित परिणामों के बारे में सोचते हैं, तो मुझे लगता है कि यह हमारे लिए थोड़ा ज़्यादा तर्कसंगत हो सकता है, कम से कम, भले ही, आप जानते हैं, मुझे नहीं लगता कि यह सदमा कभी भी पूरी तरह से खत्म होने वाला है।

लेकिन मुझे याद है कि जब मैं कई साल पहले विल्मोर, केंटकी में सेमिनरी में छात्र था, तो उन दिनों समाज कुछ बदलावों से गुज़र रहा था। विल्मोर को हम ब्लू सिटी कहते थे, आप जानते हैं, जहाँ रविवार को कोई कारोबार नहीं होता था, और सब कुछ बंद रहता था। और फिर, किसी ने फैसला किया कि वे रविवार को अपना सुविधा स्टोर खोलने जा रहे हैं।

और इसके खिलाफ़ जो तर्क दिए गए, मेरा मतलब है, यह वास्तव में केंटकी के विल्मोर नामक छोटे से शहर में काफी विवाद का विषय था। लेकिन एक तर्क यह दिया गया कि एक बार जब एक व्यवसाय रविवार को खुलता है, तो सभी व्यवसाय सोचेंगे कि उन्हें रविवार को ही खुलना चाहिए। और जो हुआ, वह वास्तव में, व्यवसाय रविवार को खुल गया।

और हममें से कई लोग, जिनमें मैं भी शामिल हूँ, सच कबूल करते हैं, वास्तव में रविवार को रुकते थे और उस छोटे से व्यवसाय से सामान खरीदते थे। और अब, विल्मोर अब एक नीला शहर नहीं रहा। आप जानते हैं, रविवार को कई अन्य व्यवसाय खुले रहते हैं।

क्या वह पहला काम था, जैसे बांध खोलना या कुछ और? बहुत संभव है। यह बिलकुल सच है कि समुदाय को प्रतिस्पर्धा करने और निर्धारित उदाहरण का अनुसरण करने की आवश्यकता

महसूस हो सकती है। और इसलिए यहाँ विचार यह था कि समुदाय यह सुनिश्चित करने के लिए खुद पर निगरानी रख रहा था कि उनकी पीढ़ियों में सब्बाथ का पालन किया जाए।

अगर एक व्यक्ति यह सोचने लगे कि वह सब्त के दिन काम करके आगे बढ़ सकता है, तो जल्द ही हर कोई ऐसा करने के लिए बाध्य महसूस करेगा। खैर, पुराने नियम के इतिहास के बारे में क्या ख्याल है? हम सब्त के दिन को पुराने नियम के बाकी हिस्सों में कैसे देखते हैं? पेंटाट्यूक के बाहर, हम शायद ही कभी सब्त का उल्लेख देखते हैं। और हमने पहले 2 राजाओं में कुछ अंशों का उल्लेख किया है।

हम यहाँ एक मिनट में इनके बारे में बात करेंगे। लेकिन यहोशू, न्यायियों, 1 और 2 शमूएल, 1 राजाओं ने कभी सब्त के दिन का उल्लेख नहीं किया, जिससे कोई आश्चर्यचकित हो सकता है, आप जानते हैं, क्या उन दिनों में वास्तव में सब्त मनाया जाता था? 2 राजा 4:23, शूनेम के पति ने कहा, आज नबी एलीशा के पास क्यों जाना? यह न तो नया चाँद है और न ही सब्त। और उसने कहा, चुप रहो।

यह फिर से उन अंशों में से एक है जो सब्त को नए चाँद से जोड़ता है। और फिर, नया चाँद कुछ ऐसा है, जो निश्चित रूप से महीने में एक बार होता है। यह एक विशेष त्यौहार का दिन होगा।

जाहिर है कि सब्त को यहाँ आराम के दिन के बजाय धार्मिक अनुष्ठान के दिन के रूप में देखा जाता है। इस बारे में सोचना दिलचस्प है, और फिर से, सब्त और इसके निर्माण के बारे में विडंबनाओं और कठिनाइयों में से एक यह है कि वह भविष्यवक्ता, ईश्वर के आदमी से मिलने के लिए यात्रा पर जाने वाली है। और उसका पति कहता है, तुम ईश्वर के आदमी से मिलने क्यों जा रही हो? और तुम यह यात्रा क्यों करने जा रही हो? यह सब्त का दिन नहीं है।

आप जानते हैं, यहूदी परंपरा के अनुसार, उन्हें सब्त के दिन यात्रा नहीं करनी थी। तो क्या यहाँ सब्त को उसी तरह समझा गया जैसा बाद में समझा गया? मुझे नहीं पता। यह अंश हमें हैरान करने वाला लगता है।

2 राजा 11 में, राजा के घर पर सब्त के दिन ड्यूटी पर तैनात पहरेदारों का जिक्र है, और इसमें पहरेदारों के बदलने की बात कही गई है। एक पहरेदार ड्यूटी से हट जाता था और दूसरा पहरेदार सब्त के दिन ड्यूटी पर आ जाता था। तो जाहिर है कि मंदिर में पहरेदारों का काम करना सब्त के दिन का उल्लंघन नहीं माना जाता था।

ठीक है? जो फिर से कुछ लोगों को इस धारणा को कुछ हद तक पुष्ट कर सकता है कि इस समय सब्त को आराम के दिन के बजाय एक त्यौहार के दिन के रूप में समझा जाता था। जैसा कि मैंने कहा, यहाँ यह वास्तव में आसान नहीं है। ठीक है? दूसरी ओर, इतिहासकार ने सब्त के बलिदानों का कई बार, कई बार उल्लेख किया है।

सब्बाथ बलिदान को किसी कारण से कभी भी सब्बाथ परंपरा का उल्लंघन नहीं माना गया, लेकिन यह हमेशा सब्बाथ पालन का एक अनिवार्य हिस्सा था। और मृत सागर स्क्रॉल में, सब्बाथ बलिदान के गीत नामक एक पाठ है, जो यह दर्शाता है कि न केवल यह एक यहूदी बात है, बल्कि

यह स्वर्ग में ही स्थापित है, कि हर सप्ताह दिन स्वर्ग में स्वर्गदूत भी बलिदान कर रहे हैं, और ये गीत गा रहे हैं, ये विभिन्न रचनाएँ जो सप्ताह बलिदान के साथ लिखी गई थीं, ताकि कुमरान, या मृत सागर स्कॉल समुदाय, जब वे सप्ताह दिन ये बलिदान कर रहे थे, तो उन्हें लगा कि वे उन स्वर्गदूतों के साथ मिलकर ऐसा कर रहे हैं जो स्वर्ग में भी बलिदान कर रहे थे। एक बार फिर, उस समय तक, मृत सागर स्कॉल के लेखन के समय तक, यीशु से दो सौ साल पहले, उन्हें स्पष्ट रूप से यह समझ आ गई थी कि सप्ताह केवल इज़राइल के बारे में नहीं है।

सब्त का दिन सृष्टि में ही निर्धारित है। नहेमायाह 10, 31 और 13, 15 से 22 तक, राज्यपाल ने सब्त के दिन व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिया। यिर्मयाह ने अपने समय में यहूदा के लोगों, यरूशलेम के लोगों के बारे में अपनी सबसे बड़ी शिकायतों में से एक यह थी कि वे सब्त के दिन द्वार खुले रखते थे और व्यापार करते थे।

और यहाँ, जब नहेमायाह राज्यपाल बन जाता है और सत्ता में आ जाता है, तो वह सप्ताह पर किसी भी तरह के व्यापार पर प्रतिबंध लगा देता है। यहाँ दिलचस्प बात यह है कि जो लोग सप्ताह के दिन गतिविधियाँ करके सप्ताह का उल्लंघन कर रहे थे, उन्हें मृत्युदंड नहीं दिया गया। तो जाहिर है, भले ही उन्होंने नहेमायाह के समय में सप्ताह व्यापार प्रतिबंधों को लागू करना शुरू कर दिया था, लेकिन वे इस बारे में वास्तव में सख्त नहीं थे कि आप उन लोगों को कैसे दंडित करते हैं जो सप्ताह का उल्लंघन कर रहे थे।

भविष्यवक्ताओं में, हमें सब्त के बारे में कुछ संदर्भ मिलते हैं, निर्वासन-पूर्व और निर्वासन-पश्चात दोनों ही भविष्यवक्ताओं ने सब्त के दिन व्यापार करने के लिए इस्राएल की निंदा की है। तो आप उन आज्ञाओं के बारे में बात करना चाहते हैं जो शायद सबसे कम लागू की गई हैं, ऐसा लगता है कि सब्त उनमें से एक था। आमोस 8.5, आमोस बेशक सबसे शुरुआती भविष्यवक्ताओं में से एक है, शायद पुराने नियम में लिखी गई सबसे शुरुआती पुस्तकों में से एक है, जिस रूप में हमें यह मिला है, लेकिन आमोस कह रहा है, नया चाँद कब खत्म होगा ताकि हम अनाज बेच सकें और सब्त ताकि हम बिक्री के लिए गेहूँ पेश कर सकें? यहाँ दिलचस्प बात यह है कि इसका तात्पर्य यह है कि सब्त के दिन उन्हें व्यापार नहीं करना चाहिए था और वे यह जानते थे और जाहिर तौर पर आमोस के दिनों में इस्राएल में इसे हतोत्साहित किया जा रहा था।

यिर्मयाह 17 में वह सब्त के दिन को अपवित्र करने के रूप में बोझ उठाने की बात करता है और लोगों से सामान इधर-उधर ले जाने से मना करता है। यहजेकेल 20 में, इस्राएल ने सब्त को अपवित्र किया जिसे परमेश्वर ने एक संकेत के रूप में दिया था, मान लीजिए कि एक पहचान चिह्न, सब्त एक संकेत है कि इस्राएल का परमेश्वर के साथ एक विशेष संबंध है और यहजेकेल कहता है कि उन्होंने सब्त का पालन न करके उस संबंध का उल्लंघन किया है। यशायाह 56, मेरा मानना है कि निर्वासन के बाद का अंश भी वादा करता है कि उन नपुंसकों और विदेशियों को पुरस्कार मिलेगा जो सब्त को अपवित्र नहीं करते हैं क्योंकि वे लोग परमेश्वर के वाचा समुदाय का हिस्सा बन रहे हैं क्योंकि वे उन जिम्मेदारियों को अपने ऊपर ले रहे हैं जो परमेश्वर ने इस्राएल के साथ की गई वाचा के साथ जुड़ी हैं।

दूसरा मंदिर यहूदी धर्म तब है जब सब्बाथ का पालन वास्तव में एक पहचान चिह्न के रूप में अधिक होने लगता है। आपको यह समझना होगा कि इस समय इस्राएल अपने पड़ोसियों के साथ बहुत अधिक संपर्क में आ रहा है और उनके लिए अपने पड़ोसियों से खुद को अलग करना अधिक से अधिक महत्वपूर्ण होता जा रहा है और इसलिए वे प्रथाएँ जो उन्हें अन्यजातियों से अलग करती हैं, कम से कम यहूदी धर्म के कुछ गुटों के लिए अधिक महत्वपूर्ण होती जा रही हैं। अब उन दिनों यहूदी धर्म के कुछ गुट ऐसे थे जो बस घुलने-मिलने की कोशिश करना चाहते थे, बाकी सभी की तरह बनना चाहते थे, मैकाबीज़ की किताब में तो यहाँ तक कहा गया है कि वे अपना खतना रद्द करने की कोशिश कर रहे थे।

इसलिए यहूदी धर्म के कुछ हिस्सों में वे हर किसी की तरह बनने के लिए चरम सीमा पर जा रहे थे और निश्चित रूप से इसकी प्रतिक्रिया यह थी कि लोग उन चीजों पर और भी अधिक जोर देने लगे जो उन्हें अन्य लोगों से अलग करती हैं और इसलिए ध्रुवीकरण हो रहा है। इसलिए द्वितीय मंदिर काल में सब्बाथ का पालन संघर्ष का एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया था। फिर से सब्बाथ का पालन एक पहचान चिह्न बन गया।

प्रथम मैकाबीस 143 के अनुसार यहूदिया में यूनानी यहूदियों ने सब्त के दिन को अपवित्र किया। इसलिए वे न केवल अपने खतने को रद्द करने की कोशिश कर रहे हैं, जो मूसा की वाचा का संकेत है, बल्कि वे सब्त को भी रद्द करने की कोशिश कर रहे हैं, जो परमेश्वर के अपने लोगों इस्राएल के साथ विशेष संबंध का संकेत है। और यह वास्तव में एंटीओचियन उत्पीड़न के दौरान एक बड़ा मुद्दा बन गया क्योंकि उस समय यहूदियों को इस तथ्य का सामना करना पड़ा कि वे यूनानियों, मैसेडोनियन और उनके सहयोगियों के खिलाफ लड़ रहे थे जो सब्त के दिन का सम्मान नहीं करते थे।

और इसलिए एक प्रसिद्ध घटना में हमारे पास विद्रोह की शुरुआत में गुट और कुछ प्रमुख गुट हैं, हसीदियन गुट, अगर आप चाहें तो धर्मपरायण लोग, और मैकाबीन गुट। हसीदियन के एक समूह पर सब्बाथ के दिन ग्रीक सेना द्वारा हमला किया गया और उन्होंने खुद का बचाव करने से इनकार कर दिया। यह सब्बाथ का दिन था जब उन्होंने तलवारें उठाने से इनकार कर दिया और इसलिए वे सभी मारे गए।

उस समय मैकाबीज़ ने शपथ ली थी कि हम उन सभी लोगों से लड़ेंगे जो हम पर हमला करेंगे, चाहे वह हमारे सब्बाथ के दिन ही क्यों न हो। इसलिए मैकाबीज़ ने यह नीति अपनाई कि संरक्षण इस पहचान चिह्न से भी ज़्यादा महत्वपूर्ण है। यह विवाद के बिना नहीं था और बाद में ऐसे लोग थे जिन्होंने इसके लिए उनकी आलोचना की और आज भी ऐसे लोग हैं जो इस बात पर बहस करते हैं कि यह सही विकल्प था या नहीं।

लेकिन आप जानते हैं कि कुछ लोग कहते हैं कि अगर उन्होंने वह नहीं किया होता जो उन्होंने किया तो सभी यहूदियों का सफाया हो गया होता। यह सच नहीं है। यह सच नहीं है क्योंकि तथ्य यह है कि एंटीओचियन उत्पीड़न के बाद भी यहूदी मौजूद थे।

बेबीलोन में यहूदी थे, फारस में यहूदी थे, मिस्र में यहूदी थे, यहूदी जो उसी तरह के उत्पीड़न के अधीन नहीं होते जैसा कि एंटीओकस यहूदिया में यहूदियों पर बरसा रहा था। इसलिए हम यह

नहीं कह सकते कि मैकाबीज़ ने सब्त के दिन लड़ने का फैसला करके यहूदी लोगों को बचाया। सिक्के का दूसरा पहलू यह है कि अगर यह बात फैल गई होती कि यहूदी सब्त के दिन खुद का बचाव नहीं करेंगे तो बेशक एक बहुत ही बुद्धिमानी भरी नीति यह होती कि यूनानियों ने उन पर केवल सब्त के दिन हमला किया होता और बहुत जल्द ही एंटीओचियन विद्रोह खत्म हो गया होता।

मंदिर काल, उत्पीड़न के समय और इसी तरह के अन्य समय के बाद, जब यहूदियों पर रोमनों ने कब्ज़ा कर लिया, तो यहूदी इस बहुत बड़े समुदाय का हिस्सा बन गए। और कभी-कभी यह हमारे दिमाग में दर्ज नहीं होता कि रोमन साम्राज्य में यहूदियों की उपस्थिति कितनी महत्वपूर्ण थी। क्योंकि यहूदियों का मानना था कि बहुत सारे बच्चे होना भगवान के आशीर्वाद का संकेत है, इसलिए वे बहुत बड़े परिवार रखते थे।

और यह बात यूनानियों और रोमनों की नज़र से नहीं बची, क्योंकि यूनानियों और रोमनों को बहुत छोटे परिवार रखने का जुनून था, आम तौर पर एक, शायद कभी-कभी दो बच्चे। जबकि एक औसत यहूदी, छह, सात, आठ, कौन जानता है कि कितने? आप जानते हैं, उन दिनों जन्म नियंत्रण वास्तव में प्रभावी नहीं था। और इसलिए रोमन और यूनानियों ने शिशुहत्या का अभ्यास किया।

और इसी तरह से उन्होंने अपने परिवार को छोटा रखा। यहूदी इस प्रथा से भयभीत थे और उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया। इसलिए यहूदी फैलते गए और बढ़ते गए।

और कई अनुमान कहते हैं कि वे संभवतः रोमन साम्राज्य में सबसे बड़ा जातीय समूह थे। और यहूदियों को वे दिलचस्प लगे, बल्कि रोमनों को यहूदी दिलचस्प लगे। रोमन वास्तव में यहूदियों से काफी मोहित थे।

वे उनसे नफरत करते थे। प्रसिद्ध रोमन वक्ता सिसरो ने कई भाषण दिए, जिसमें उन्होंने यहूदियों के खिलाफ तीखी आलोचना की। और इन भाषणों से, हम जो सीखते हैं, उनमें से एक यह है कि सब्त का पालन करने की यहूदी प्रथा का रोमन महिलाओं द्वारा अनुकरण किया जा रहा था।

और इसलिए सिसरो इस बात से भयभीत था, आप जानते हैं। लेकिन सब्बाथ का दिन सिर्फ यहूदियों की चीज़ नहीं रह गया था। यह, ओह, क्या यह अजीब तरह की चीज़ नहीं है? इसलिए रोम में उच्च समाज का हर व्यक्ति अपने-अपने तरीकों से यहूदियों जैसा बनने की कोशिश कर रहा था, आप जानते हैं।

बहुत रोचक है, क्योंकि ऐसा लगता है कि रोमन लोग किसी भी ऐसी चीज़ से आकर्षित होते थे जो नई लगती थी, और खास तौर पर ऐसी चीज़ें जो पूर्व से आती थीं और जो थोड़ी अजीब और असामान्य लगती थीं, जैसे, आप जानते हैं, वह गुप्त नाम यहोवा, उदाहरण के लिए। इसलिए यहूदी सब्बाथ दिवस को कुछ गैर-यहूदियों, कुछ रोमनों ने अपनाया, और किसी भी तरह से उन सभी ने नहीं, किसी भी तरह से नहीं, बल्कि कुछ रोमनों ने भी अपनाया। इसलिए यह अधिक नोटरीकृत, नोट किया जाने लगा।

और रोमियों के लिए, यह एक तरह की दिलचस्प दुविधा थी जो उन्हें सब्बाथ के प्रति थी। एक तरफ, उन्हें लगा कि यह आलस्य का एक बहाना है। उनमें से कई लोगों ने दावा किया कि यहूदी सभी आलसी लोग थे, और आप उनसे उनके सब्बाथ के दिन काम नहीं करवा सकते थे, और अगर आपके पास कोई यहूदी गुलाम है, तो आप उनसे उनके सब्बाथ के दिन कोई भी अच्छा काम नहीं करवा सकते थे।

दूसरी ओर, यह आकर्षण और यह अनुकरण था जो घटित हो रहा था। बहुत दिलचस्प तरह का परिप्रेक्ष्य। सब्त के बारे में यीशु का क्या कहना है? खैर, आप जानते हैं, यह यीशु के फरीसियों और अपने समय के अन्य धार्मिक नेताओं के साथ होने वाले प्रमुख टकरावों में से एक बन गया, क्योंकि, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, आप जानते हैं, दस आज्ञाएँ थोड़ी अस्पष्ट हैं।

सब्बाथ डे याद है? अच्छा, इसे याद करने का क्या मतलब है? अरे, यह सब्बाथ डे है। मैं लगभग भूल ही गया था। नहीं, शायद उससे थोड़ा ज़्यादा।

याद रखें, हर हफ़्ते इसे फिर से दोहराएँ। सब्त के दिन को याद रखें। इसे पवित्र रखें।

इसे पवित्र करो। तुम काम मत करो। तुम बाकी छह दिन अपना श्रम करते हो, लेकिन तुम सातवें दिन श्रम मत करो।

तो यह बात है। आप सब्त के दिन कोई काम नहीं करते। आप इसे कैसे पवित्र रखते हैं? खैर, आखिरकार, निश्चित रूप से, उनके पास ये सब्त के बलिदान हैं जो वे हमेशा करते हैं और प्रवासी क्षेत्रों में बाहर आराधनालय सेवाएँ करते हैं।

लेकिन आपको क्या करने की अनुमति थी? आपको क्या करने की अनुमति नहीं थी? काम क्या था? आप जानते हैं, सब्त के दिन लकड़ियाँ इकट्ठा करने वाला व्यक्ति स्पष्ट रूप से काम था, इस हद तक कि इसके लिए उसे पत्थर मारकर मार डाला गया। जब आप इसके बारे में सोचते हैं तो यह दिलचस्प लगता है। आप सोचते हैं कि क्या उन्होंने उसे अगले दिन तक रोके रखा और फिर उसे पत्थर मारकर मार डाला।

क्या उसे पत्थर मारकर मार डालना काम माना जाता? लाठी उठाना काम है। पत्थर उठाना? खैर, फरीसियों और अन्य यहूदी संप्रदायों ने काम की परिभाषा के बारे में नियम बनाए। और निश्चित रूप से, हम मिशनाह और तल्मूड में पाए जाने वाले कुछ बाद के नियमों को पहले से ही सुसमाचार में परिलक्षित होते हुए देखते हैं।

और इनमें यह सवाल भी शामिल है कि क्या आप सब्त के दिन किसी को ठीक कर सकते हैं या नहीं। और मैं एक बार शिकागो विश्वविद्यालय में एक कक्षा पढ़ा रहा था, और उस कक्षा में कुछ यहूदी छात्र थे। और उनमें से एक इस मुद्दे पर काफी उग्र हो गया, सुसमाचारों के बारे में कह रहा था कि सब्त के दिन यीशु के चंगाई करने के कारण फरीसी नाराज़ थे।

और उसने कहा, कोई भी यहूदी कभी नहीं कहेगा कि सब्त के दिन आप किसी को ठीक नहीं कर सकते। और मैंने कहा, और उसे यहूदी पवित्र पुस्तक मिशनाह में बताया, यह कहता है कि

अगर सब्त के दिन किसी की हड्डी टूट जाए तो आपको हड्डी जोड़ने की अनुमति नहीं है, कि आपको टूटे हुए हाथ या टूटे पैर को सीधा करने की अनुमति नहीं है, कि आप उसे भिगो सकते हैं, लेकिन सब्त के दिन आप उसे रगड़ नहीं सकते। तो हाँ, यह विचार कि सब्त के दिन टूटी हुई हड्डी को रगड़ना या जोड़ने की कोशिश करना काम था, यहूदी कानून में स्थापित हो गया।

और हम फिर से देखते हैं कि, जैसा कि मैंने कहा, यह पहले से ही सुसमाचारों में परिलक्षित होता है। जब यीशु सब्त के दिन एक व्यक्ति को ठीक करने के लिए मुसीबत में पड़ जाता है, तो ठीक है, एक बार नहीं, बल्कि कई बार, है न? सब्त के दिन के पालन के बारे में यीशु अक्सर फरीसियों से भिड़ जाता था। क्या सब्त के दिन मानवीय पीड़ा को कम करना वैध है? एक दिन उसके शिष्य एक खेत से गुजर रहे थे और वे खेत से गुजरते हुए अनाज की बालियाँ तोड़कर खा रहे थे।

और फरीसी कहते हैं, आपके शिष्य सब्त के दिन ऐसा क्यों करते हैं जो उचित नहीं है? यदि सारा अनाज कहीं ढेर में पड़ा होता, और वे मुट्ठी भर अनाज उठाकर खा लेते, तो यह सब्त के दिन का उल्लंघन नहीं होता। लेकिन चूँकि वे अनाज तोड़ रहे हैं, इसलिए यह सब्त का उल्लंघन है। और यीशु उन्हें यह कहानी सुनाते हुए जवाब देते हैं कि कैसे दाऊद और उसके आदमियों ने भूख लगने पर पवित्र रोटी खाई, और इस बारे में यह अद्भुत कथन दिया कि कैसे सब्त मानवता के लाभ के लिए बनाया गया था, न कि मानवता सब्त के लिए।

हम सब्त का पालन करने के उद्देश्य से नहीं बनाए गए हैं। सब्त हमारे लाभ के लिए बनाया गया है। आप जानते हैं, और मूल रूप से यीशु के लिए इसका मतलब यह है कि अगर सब्त का पालन करना बोझ बन जाता है, तो आपने सब्त के दिन के उद्देश्य को कमज़ोर कर दिया है, है न? उन्होंने सब्त के लिए एक व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया।

उसके लाभों को बनाए रखें, विश्राम के लाभों को बनाए रखें, उपासना के लाभों को बनाए रखें, लेकिन बहुत सारे नियमों का कानूनी पालन करके नहीं। यही बात यीशु ने सब्त के ज़रिए स्पष्ट रूप से समझाने की कोशिश की थी। सब्त का मतलब हमारे लिए फ़ायदेमंद होना है, न कि हमारे लिए बोझ बनना।

बाद में नए नियम में, हम पाते हैं कि सब्त पर लगातार जोर दिया जाता है, लेकिन सब्त के दिन का कई बार उल्लेख किया गया है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में शिष्यों को सब्त के दिन आराधनालय में जाते हुए कई बार दर्शाया गया है। इसलिए वे सब्त का पालन करना जारी रखते हैं, भले ही वे यीशु के अनुयायी हैं, वे आराधनालय में जाना जारी रखते हैं, और आम तौर पर वे वहाँ शिक्षा देते हैं, है न? पौलुस ने कुलुस्सियों को चेतावनी दी, जो मूल रूप से यहूदी नहीं थे, उनमें से अधिकांश शायद, लोगों को उनके बारे में और उनके सब्त के दिन के पालन के तरीके के बारे में निर्णय लेने की अनुमति न दें।

और यहाँ एक दिलचस्प सवाल है, क्या पॉल कुलुस्सियों से कह रहा है कि उन्हें सब्त का पालन करने की ज़रूरत नहीं है, कि वे इसे अनदेखा कर सकते हैं? मुझे ऐसा नहीं लगता। बल्कि, इसका संबंध उन यहूदीवादियों से है, वे लोग जो सब्त का पालन कैसे किया जाना चाहिए, इस

बारे में कुलुस्सियों पर नियम थोपना चाहते हैं। और पॉल कहते हैं, उन्हें यह मत कहने दो कि तुम यह गलत कर रहे हो।

इसे उस तरीके से करें जो आपके लिए कारगर हो। आपको क्या लाभ होगा? यही यीशु का दृष्टिकोण है। आपको क्या लाभ होगा? सब्बाथ आपके लिए कैसे काम करता है? यह आपके लिए आराम का दिन कैसे है? इब्रानियों में, इब्रानियों की पुस्तक में, व्याख्या की विशिष्ट अलेक्जेंड्रिया शैली जो हमें इब्रानियों की पुस्तक में मिलती है, आप जानते हैं, व्याख्या की अलेक्जेंड्रिया शैली आध्यात्मिकता को पसंद करती है और इन पुराने नियम के बहुत से अभ्यासों और नियमों में आध्यात्मिक अर्थ ढूँढती है।

और इब्रानियों के हमारे लेखक भी उसी तरह के उदाहरण का अनुसरण करते हैं। जब वह सब्त के दिन में आध्यात्मिक महत्व देखता है, तो वह तर्क देता है कि सब्त उस विश्राम का पूर्वाभास है जो हमें स्वर्ग में मिलेगा। अब, कुछ लोगों ने मुझे कभी-कभी इस पर चुनौती दी है कि, क्या इब्रानियों की पुस्तक यह नहीं कहती है कि हमें यहाँ सब्त करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि सब्त स्वर्ग में हमारा इंतज़ार कर रहा है? मुझे नहीं लगता कि इब्रानियों के लेखक यही कह रहे हैं।

मुझे लगता है कि वह जो कह रहा है वह यह है कि वहाँ हम एक सच्चे, शुद्ध सब्त का अनुभव करेंगे। यहाँ जो सब्त हैं वे एक तरह से पूर्वाभास की तरह हैं। यह एक तरह से, आप जानते हैं, यह प्लेटोनिक है, आप जानते हैं, शुद्ध और परिपूर्ण सब्त वह है जिसका हम स्वर्ग में आनंद लेंगे।

यहाँ जो सब्त मनाए जाते हैं, वे उस शुद्ध और परिपूर्ण सब्त का एक धुंधला प्रतिबिंब हैं, जो तब होता है जब हम परमेश्वर की उपस्थिति में होते हैं। मुझे यह बताना चाहिए कि न्यू टेस्टामेंट के किसी भी लेखक ने वास्तव में सब्त मनाने के विचार को अस्वीकार नहीं किया है। न्यू टेस्टामेंट में कभी कोई यह नहीं कहता कि आपको सब्त मनाने की ज़रूरत नहीं है, या निश्चित रूप से कोई यह नहीं कहता कि आपको सब्त का दिन नहीं मनाना चाहिए।

क्या सब्त के दिन के सिद्धांत नए नियम में अलग-अलग तरीकों से लागू होते हैं? निश्चित रूप से, ईसाई धर्म और यहूदी धर्म इस बिंदु पर अलग हो गए। इस बारे में कोई सवाल नहीं है। अब, अंततः ईसाई धर्म ने सब्त के दिन के अपने पालन के बारे में नियम और विनियम विकसित किए, लेकिन यह यहूदी धर्म में प्रचलित भावना से अलग तरह की भावना थी।

तो, हम शनिवार से रविवार में कैसे बदल सकते हैं? हमेशा कुछ ऐसा होता है जो एक दिलचस्प सवाल होता है, आप जानते हैं, और एक बार फिर, हम प्रेरितों के समय में पहले से ही देखते हैं, नया नियम हमें बताता है कि ईसाई सप्ताह के पहले दिन, रविवार को, मसीह के पुनरुत्थान के दिन एकत्र हुए थे। उन्होंने यह अधिनियम 20 के अनुसार, 1 कुरिन्थियों के अनुसार किया। वे सप्ताह के पहले दिन एक साथ आ रहे थे।

क्या वे अभी भी ऐसा ही कर रहे थे? क्या वे इसे सब्बाथ कह रहे थे? नहीं, वे उस समय इसे सब्बाथ नहीं कह रहे थे। यह प्रभु का दिन था, यह सप्ताह का पहला दिन था, और इसे पूजा के विशेष समय के रूप में अलग रखा जा रहा था। वे ऐसा क्यों कर रहे थे? बहुत संभव है, इसका

कारण यह है कि रोमन दुनिया में, रविवार आराम का दिन था, वह दिन जब आप काम से छुट्टी लेते थे, और इसका कारण यह है कि यह आम तौर पर वह दिन होता था जब वे सूर्य और उस तरह की चीजों से संबंधित महान त्यौहार मनाते थे।

इसलिए, जब आप रविवार को बड़ी-बड़ी पार्टियाँ करते थे, तो आप अपने दासों को काम से छुट्टी दे देते थे, जबकि ईसाई इसका फ़ायदा उठाते थे और वे इकट्ठा होते थे और अपनी बैठकें करते थे क्योंकि बहुत से शुरुआती ईसाई दास थे। उनमें से बहुतों को शनिवार को काम करना पड़ता था, इसलिए वे रविवार को मिलते थे। जैसे-जैसे चर्च ज़्यादा गैर-यहूदी होता गया, उसने रविवार को ज़्यादा ध्यान देकर खुद को यहूदियों से दूर करना शुरू कर दिया।

और हम इसे कुछ आरंभिक चर्च पिताओं की बयानबाजी में देखते हैं। 100 ई. तक, यह आम बात हो गई थी कि चर्च शनिवार के बजाय रविवार को अपनी पूजा और विश्राम का दिन मनाएगा। और हाँ, आरंभिक चर्च पिता ऐसे भी थे जिन्होंने यहूदी शनिवार सप्ताह को अस्वीकार कर दिया था।

और इसलिए संघर्ष इस बिंदु पर शुरू हुआ। ऐसा लगता है कि यह बहुत ही व्यावहारिक तरीके से शुरू हुआ था, इस तथ्य का सम्मान करने का एक तरीका कि आपको आराम का दिन और पूजा का दिन और भगवान पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, लेकिन आप रोमन कैलेंडर के कारण शनिवार को ऐसा नहीं कर सकते थे। मुझे लगता है कि यीशु ने इसे स्वीकार किया होगा, आप जानते हैं, और आपने रविवार के दिन को एक नया अर्थ दिया।

यह वह दिन है जब ईश्वर ने प्रकाश की रचना की थी। यह वह दिन है जब यीशु मृतकों में से जी उठे थे। हमारे लिए पूजा करने, जलपान के लिए समय निकालने और परिवार के लिए रविवार से बेहतर दिन और क्या हो सकता है? और इसलिए रविवार एक तरह से ईसाई पहचान चिह्न बन गया।

रविवार को विश्राम दिवस के रूप में औपचारिक रूप देने की शुरुआत 313 ई. में हुई जब सम्राट कॉन्स्टेंटाइन ने इसकी घोषणा की। सप्ताह दिवस वास्तव में रविवार से थोड़ा बाद में आया, जिसे ईसाई सप्ताह दिवस घोषित किया गया। और मुझे यह भी यकीन नहीं है कि इसे कभी औपचारिक रूप दिया गया है या नहीं।

मुझे वास्तव में इस पर जाँच करनी होगी। लेकिन यह वास्तव में चर्च के इतिहास में थोड़ा बाद में आया था जब रविवार को ईसाइयों का सप्ताह घोषित किया गया था। हालाँकि, यह अनौपचारिक रूप से हमारा सप्ताह था, और यह अनौपचारिक रूप से पहली शताब्दी ईस्वी से ही हमारा सप्ताह रहा है।

फिर से, मैंने इस बात का उल्लेख दो बार किया, यीशु का सप्ताह के प्रति एक व्यावहारिक दृष्टिकोण था। और यहाँ भी, हम देखते हैं कि सप्ताह के पालन का दिन व्यावहारिक था, कि चर्च के लिए रविवार को ऐसा करना अधिक उचित था। और इसलिए मेरा मानना है कि यह सप्ताह की भावना के अनुरूप है।

तो, क्या आज ईसाइयों को सब्बाथ का पालन करना चाहिए? यह पूरी बात का सार है, क्योंकि कुछ लोग कहते हैं कि नहीं, सब्बाथ यहूदियों का नियम था। यह उन सभी कानूनों का हिस्सा था जो यहूदियों को परमेश्वर के वाचा के लोगों का हिस्सा बनाते थे। हम उन कानूनों से उतने ही बंधे नहीं हैं जितने हम उन कानूनों से बंधे हैं जो कहते हैं कि आपको सूअर का मांस खाने से बचना चाहिए।

हम पुराने नियम के नियमों से बंधे नहीं हैं। मुझे नहीं लगता कि इस्राएल पुराने नियम के नियमों से बंधा था। मुझे लगता है कि पुराने नियम के नियमों के कारण वह स्वतंत्र था, लेकिन यह एक अलग सवाल है।

पॉल ने व्यवस्था की छवि को एक शिक्षक के रूप में इस्तेमाल किया है। यह हमें अच्छे सिद्धांत सिखाता है, और वे सिद्धांत ऐसी चीजें हैं जिनका हम पालन करना जारी रखते हैं। जब आप एक शिक्षक के अधीन होते हैं, तो अंततः आप स्नातक हो जाते हैं, और आपको अब शिक्षक की आवश्यकता नहीं होती है।

क्या इसका मतलब यह है कि आप अपने द्वारा सीखे गए सभी सबक भूल गए हैं? उम्मीद है कि ऐसा न हो। बल्कि, हमने जो सबक सीखे, जो सत्य थे और जिन्हें शिक्षक ने हमें सिखाया, वे बाद में भी हमारे लिए महत्वपूर्ण बने रहते हैं। मेरा मतलब है, हमारे ऊपर कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो डंडा लेकर हमारे हाथों पर वार करने के लिए तैयार हो, अगर हम अपने सबक सही से न सीख पाएं, लेकिन हम सिद्धांतों को अपने दिलों में, अपनी आत्माओं में समाहित कर लेते हैं।

हालाँकि सब्बाथ सिनाई वाचा का एक संकेत था, लेकिन इसे सृष्टि के समय स्थापित किया गया था। यही तर्क निर्गमन की पुस्तक में दिया गया है। यही तर्क बाद में रब्बियों और इंटरटेस्टामेंटल यहूदी धर्म में उद्धृत किया गया है।

समझ यह है कि सब्त के बारे में कुछ सार्वभौमिक है, न कि सब्त के बारे में कुछ खास यहूदी। यीशु ने सब्त को मानवता के लाभ के रूप में मनाने पर जोर दिया, न कि केवल इस्राएल के लाभ के रूप में। यीशु ने यह नहीं कहा कि सब्त इस्राएल के लिए बनाया गया था, न कि इस्राएल सब्त के लिए।

उन्होंने कहा कि सब्त का दिन मानवता के लिए बनाया गया था, ताकि हम सभी को आराम का दिन, ताज़गी का दिन मिलने से लाभ हो। तो, आइए यहाँ आराम के दिन के कुछ लाभों के बारे में बात करें। पुराने नियम और नए नियम में विभिन्न शास्त्रों में इन सभी का उल्लेख किया गया है।

सबसे पहले, सब्बाथ के पर्यावरणीय लाभ। दुनिया को आराम की ज़रूरत है। जीवित प्राणियों को आराम की ज़रूरत है।

आप अपने जानवरों को सब्बाथ के दिन आराम करने देंगे। बिल्लियों को कोई परेशानी नहीं है। वे इस काम में माहिर हैं।

लेकिन भूमि को अपना सब्त रखना था। अब, वे सब्त आम तौर पर हर सात साल में या हर महीने सब्त या ऐसा ही कुछ होता है। लेकिन ऐसे दिन भी थे जब भूमि को आराम दिया जाना था ताकि वह खुद को तरोताजा कर सके।

जानवरों को हर हफ्ते एक दिन की छुट्टी दी जानी थी। अब, अपने जानवरों पर दबाव मत डालो। उनसे काम मत करवाओ।

उन्हें आराम की ज़रूरत है। इसलिए, भूमि, दुनिया, अपने प्राणियों और अपने लिए आराम का समय रखने का विचार, सब्त की स्थापना के लिए बहुत महत्वपूर्ण और बहुत महत्वपूर्ण और केंद्रीय था, और आज भी हमें लाभ पहुँचाता है। अब, इतिहास में कई बार ऐसा हुआ है जब अत्याचारियों ने सातवें दिन के सब्त को खत्म करने की कोशिश की है।

और यह फ्रांस में फ्रांसीसी क्रांति के दौरान किया गया था। रूसियों ने एक समय ऐसा करने की कोशिश की थी क्योंकि उनका विचार था कि अगर वे ईसाई सब्बाथ से छुटकारा पा सकते हैं, तो वे ईसाई धर्म और उनकी नई विश्व व्यवस्था को कमजोर कर सकते हैं। यह काम नहीं आया क्योंकि लोगों को आराम की ज़रूरत होती है।

ज़मीन को आराम की ज़रूरत है। जानवरों को भी आराम की ज़रूरत है। जब उन्होंने फ्रांस में 10 दिन का कार्य सप्ताह लागू करने की कोशिश की, तो उन्होंने पाया कि घोड़े थकावट से मर रहे थे।

हमारी दुनिया में कुछ ऐसा बना हुआ है जो सातवें दिन के चक्र पर बेहतर काम करता है। वैसे, मुझे यह बताना चाहिए कि यह यहूदियों की बात है। आप बेबीलोनियों, मिस्रियों या रोमनों को देखें, उनके पास सात दिन का सप्ताह नहीं था।

यह सब यहूदियों से आया। लेकिन यह काम करता है। ऐसा लगता है कि भगवान को पता था कि वह किसी अजीब कारण से क्या कर रहा था।

नैतिक तर्क यह है कि हम दूसरों को और जानवरों को उनकी ज़रूरत के हिसाब से आराम देने की ज़िम्मेदारी लेते हैं। बेशक, इस बात पर निर्गमन और व्यवस्थाविवरण दोनों में ज़ोर दिया गया है, यह विचार कि आपको लोगों से बहुत ज़्यादा काम नहीं करवाना चाहिए। हमारे देश में सब्बाथ का पालन राज्य द्वारा लागू किया गया है।

हमारे यहां रविवार को कानून लागू है। यह ओंटारियो प्रांत से है। कुछ अपवादों के साथ, कुछ आवश्यक कार्यों को छोड़कर, श्रम पर प्रतिबंध है।

अगर कोई रविवार को छुट्टी नहीं ले सकता, तो वह दूसरा दिन ले सकता है। यहाँ महत्वपूर्ण विचार यह था कि आपके पास आराम का समय है। अगर हम इसे किसी तरह लागू नहीं करते, अगर हमारे पास, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, हमारे दिमाग में यह तर्क है कि काम अच्छा है, आराम इतना अच्छा नहीं है।

हम लोगों पर दबाव डालते हैं। इसके भयंकर परिणाम होते हैं, जैसा कि हमने अपने समय में कुछ समाजों में देखा है, जहाँ लोग काम के दौरान थकान से मर रहे हैं। ईश्वर की योजना है कि लोग अपने कर्मचारियों से पूरी तरह काम न करवाएँ।

उन्हें उन्हें आराम के लिए उचित समय देना था। और इसलिए, सब्बाथ में भी नैतिक निहितार्थ निहित है। उत्पीड़ितों के प्रति हमारी जिम्मेदारी है।

हमारी जिम्मेदारी है कि हम उन्हें उन लोगों से बचाएँ जो उनका शोषण करते हैं। ऐसे लोग हैं जो अपने लोगों से तब तक काम करवाएँगे जब तक वे उनसे पैसे कमा सकते हैं। और ऐसे लोग भी हैं जो इतने हताश हैं कि वे तब तक काम करना जारी रखेंगे जब तक उन्हें काम नहीं करना चाहिए।

उस चक्र की योजना बनाकर और उसका पालन करके, जिसमें विश्राम का दिन अंतर्निहित है, हम खुद को उन लोगों के पक्ष में रख रहे हैं जो उत्पीड़ित हैं, उन लोगों के पक्ष में जो लालची लोगों द्वारा शोषित किए जा रहे हैं। और फिर, बेशक, इसका एक आध्यात्मिक पक्ष भी है क्योंकि सब्ब के दिन को पवित्र रखने का मतलब है इसे परमेश्वर के लिए अलग रखना।

हमें हर हफ्ते अपने समय का एक हिस्सा पूजा-पाठ, चिंतन, परिवार के साथ बिताने और अपने पड़ोसियों और अपने प्रियजनों के साथ पवित्र तरीके से जुड़ने में लगाना चाहिए। हमारे पास एक ऐसा दिन है जो हमारे पूरे हफ्ते के लिए एक पैटर्न तय करता है, जब आप इसके बारे में सोचते हैं। आप अपना रविवार कैसे बिताते हैं? यह आपके पूरे हफ्ते पर किसी न किसी तरह से असर डालेगा।

अगर हम अपना रविवार गोल्फ़ कोर्स पर बिताते हैं, तो हमें पवित्रता नहीं मिलती; हमें शायद निराशा मिलती है। अगर हमारा दिन टेलीविज़न सेट के सामने या दफ़्तर में बीतता है, जैसा कि आजकल बहुत से लोग करते हैं, तो हम ईश्वर से संभावित मुलाकात से बच रहे हैं। और हम खुद को उन मौकों से दूर कर रहे हैं जो हमें दूसरों से मिलने, अपनी आत्माओं को प्रोत्साहित करने, सप्ताह के बाकी दिनों के लिए खुद को तरोताज़ा करने के लिए मिलते हैं, जहाँ हम अपने दैनिक कार्यों में लगे रहेंगे और शायद उन चीज़ों से दूर हो जाएँगे जो हमारी आत्माओं, हमारी आत्माओं को पोषण देती हैं।

मैं आपको एक छोटी सी कहानी सुनाता हूँ। 75 साल से भी ज़्यादा पहले, लेटी कॉवमैन नाम की एक महिला थी। वह एक मिशनरी और लेखिका थी।

और उसने एक यात्री के बारे में एक कहानी साझा की जो अफ्रीका के माध्यम से एक लंबी यात्रा कर रहा था। और उन्होंने अपने सामान को ढोने के लिए एक स्थानीय जनजाति के लोगों को काम पर रखा था। खैर, पहले दिन, वे तेजी से आगे बढ़े और वे बहुत दूर तक चले गए, और यात्री बस इस बात से उत्साहित था कि वे कितनी अच्छी प्रगति कर रहे हैं।

दूसरी सुबह, आदिवासियों ने हिलने से मना कर दिया, बस बैठ गए, और आराम करने लगे। और जब यात्रियों ने उन्हें बहलाया और उन्हें और पैसे देने की पेशकश की और इन लोगों को हटाने के

लिए कई तरह के प्रयास किए, तो उन्होंने साफ मना कर दिया। और इसलिए आखिरकार उन्होंने कुछ ऐसा किया जो शायद हमें स्पष्ट लगे।

उन्होंने पूछा कि वे आगे क्यों नहीं बढ़ेंगे। और उन्होंने जो कहा वह यह था कि वे पहले दिन बहुत आगे बढ़ गए थे और अब उन्हें अपनी आत्मा को अपने शरीर से मिलाने के लिए रुकना होगा। लेटी कोमैन ने लोगों को इस तरह से प्रोत्साहित करते हुए निष्कर्ष निकाला।

उन्होंने कहा, यह भागती-दौड़ती जिंदगी, जो हममें से बहुत से लोग जीते हैं, हमारे लिए वही करती है जो मार्च के पहले दिन ने उन गरीब जंगल के आदिवासियों के लिए किया था। अंतर यह है कि वे जानते थे कि जीवन के संतुलन को बहाल करने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए। अक्सर, हम नहीं जानते।

बेशक, आप इसके बारे में सोचिए, वह 75 साल पहले की बात है, और आज जीवन की गति कितनी अधिक है? सप्ताह का दिन कितना अधिक कीमती, कितना अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है? हमारे लिए यह कितना अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है कि हम वास्तव में, अपनी आत्माओं को अपने शरीर के साथ तालमेल बिठाने दें, एक दिन ताज़गी, आराम और सप्ताह का पालन करें।

यह डॉ. एंथनी जे. टॉमसिनो और दस आज्ञाओं पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 5, आज्ञा 4: सप्ताह है।